Research Journal of Language, Literature and Humanities E-ISSN 2348-6252
Vol. **5(3),** 7-11, July **(2018)** *Res. J. Lang. Lit. Humanities*

भारतीय वाद्य संगीत के शाश्वत् भविष्य में पारम्पारीक ज्ञान और प्रगत संशोधन की एकत्रित भूमिका

Sunil Babulalji Patake
Department of Music, Arts College, Akola (Malkapur), Tq. Dist. Akola, Maharashtra, India
patake.sunil@gmail.com

Available online at: www.isca.in, www.isca.me
Received 16th April 2018, revised 3rd July 2018, accepted 15th July 2018

सारांश

भारतीय शास्त्रीय संगीत में वाद्यो का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। पोराणिक गाथाओं में भी हम पारम्पारिक वाद्यों को किसी न किसी रुप में पाते हैं। शिवजी डमरु बजाते थे, जो आज तक भी पारंम्पारीक लोक वाद्य बना हुआ है। इस प्रकार पारम्पारीक वाद्य की श्रृखंला में विष्णुजी - शंख, कृष्ण - बंसी, आदी हैं। पारंम्पारीक वाद्य परम्परा में सर्व प्रथम ताल वाद्य की हुई होगी, क्योंकी एक तो साधन आसानी से उपलब्ध हुएँ होंगे और उन्हें बजाना भी आसान रहा होगा। पारम्पारीक वाद्य परंम्परा में आधुनिक काल में अनेक प्रगत संशोधन हुये हैं और पारम्पारिक वाद्य का आकार छोटा हुँआ हैं और उस वाद्य में सुक्ष्म ध्वनी सुनाई दे रहे है इससें पारम्पारीक की आवाजही सुचारु हुई हैं। पारंम्पारीक वाद्य की जगह अब इलेक्ट्रानिक यंत्र वाद्य ने ली हैं। एक ही इलेक्ट्रानिक वाद्य यंत्र अनेक पारम्पारीक वाद्यों का आवाज निकालता है इस लिये आधुनिक काल में सभी वाद्य साथ ले जाने की आवश्यकता नही हैं। यह प्रगत आधुनिक संशोधन का कमाल हैं इस प्रगत संशोधक ने भारतीय वाद्य संगीत जगत नवक्रांती लायी हैं यहँ प्रगत संशोधन पारंम्पारीक वाद्यों के आधारपरही नवीनतम संशोधन कर सका हैं। इस लिये पारम्पारीक ज्ञान और प्रगत संशोधन का यथोचित संगम भारतीय शास्त्रीय वाद्य संगीत के शाश्वत भविष्यके लिये अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। प्रस्तुत संशोधन यँह भारतीय शास्त्रीय संगीत के वाद्यों के पारम्पारिक और आधुनिक संशोधित वाद्यों के व्दारा भारतीय शास्त्रीय संगीत के उत्तरोत्तर विकास पर आधारित हैं।

संकेत शब्द: पारम्पारीक वाद्य, इलेक्ट्रानिक प्रगत संशोधन, शाश्वत भविष्य

प्रस्तावना

भारतीय संगीत की अत्यंत महत्त्वपूर्ण शाखा यहँ भारतीय वाद्य संगीत है। भारतीय वाद्य संगीत की परम्परा अत्यंत प्राचीन है। प्रस्तुत शोध निबंध यहँ भारतीय वाद्य संगीत के शाश्वत भविष्य् के लिये पारम्पारिक ज्ञान और प्रगत संशोधन की भुमिका यहँ है। वाद्य बनाने की कल्पना कैसे व्यक्त् हुई होगी। वाद्य किस प्रकार निर्माण हुये होगे। निसर्ग के कौन से और कैसे घटनाओं से वाद्य निर्मिती के कारक हुये होगे। प्राचीन काल के विचारवंतोने इसके संम्ब्ध में क्या मत व्यक्त् किये है। आधुनिक वैज्ञानिकोंने मनुष्य् के वाद्य-वादन, वाद्य संगीत के संम्बधके किस प्रकार मत व्यक्त् किये हैं। 'वद' इस धातु से वाद्य यहँ निर्माण हुँआ हैं। वाद्य इसका मतलब यहँ है की जो वदू (बजाया) जाता है इसलिये वाद्य बताया गया। प्रस्तुत शोध निबम्ध् में पारम्पारिक ज्ञान और प्रगत संशोधन इसके एकत्रित भूमिका से आज के आधुनिक काल में इलेक्ट्रोनिक के सहयोग से नये-नये उपकरणे निर्माण हुये हैं। इस की उपयोगीता से भारतीय वाद्य संगीत में नवक्रांती हुई है, प्रस्तुत संशोधन प्रगत संशोधन और पारम्पारिक ज्ञान के महत्त्वपूर्ण भूमिका पर आधारित है।

संशोधन की आवश्यकता

भारतीय संगीत का एक अत्यंत महत्वपूर्ण और आवश्यक् भाग वाद्य यहँ है। भारतीय संगीत की प्रारंम्भीक अवस्था से वाद्य और वाद्य संगीत को अनन्य् साधारण महत्व् दिया गया है।

प्रस्तुत शोध निबंध यहँ "भारतीय वाद्य संगीत के शाश्वत् भविष्य में पारम्पारिक ज्ञान और प्रगत संशोधन की एकत्रित भूमिका" इस विषय पर आधारित हैं। आधुनिक काल के अध्य्यनकर्ता या संगीत का प्रारंम्भीक ज्ञान प्राप्त् कर रहे छात्र इन्होंने पारम्पारीक वाद्य के आधुनिक काल के इलेक्ट्रोनिक रूप को ही देखा है। परंतु इसका अर्थ यहँ नही की प्रगत संशोधन के द्वारा पारम्पारिक वाद्य का आधुनिक मान्य् ना करे या उपयोग में न लाये। आधुनिकता को मान्य् करते हुये पारम्पारिक वाद्य का भी अध्य्यन होना चाहिये क्योंकी भारतीय शास्त्रीय संगीत को पारम्पारिक ज्ञान और प्रगत संशोधन की एकत्रित भुमिका के माध्यम से आधुनिक काल में भारतीय वाद्य संगीत को महत्त्वपूर्ण स्थान मिला हैं। इस लिये पारम्पारिक ज्ञान और प्रगत संशोधन की एकत्रित भूमिका इस विषय पर नए दृष्टीकोन से संशोधन करने की आवश्यकता संशोधनकर्ता को महसुस होती हैं।

संशोधन का उद्देश और उपयोगिता

प्रस्तुत संशोधन का मुख्य् उद्देश यहँ है की आधुनिक युग में प्रत्येक संगीत साधक, गायक, संगीत का अध्य्यनकर्ता नव संशोधक को आधुनिक युग के गती मानता से खुदको गतीमान करना और संगीत का प्रत्येक वाद्य यहँ आकार में बहुत बड़ा और उपयोग में कोमल हैं इसपर पारम्पारिकता के ज्ञान से नवनिर्मित वाद्यो की कल्पना के आधुनिकता के साथ चलने का महत्त्व किया हैं और इस के आधार पर कौन-कौन वाद्यो की नवनिर्मिती हो सकती है। इसके आधारपर भारतीय वाद्य संगीत की परम्परा उत्तरोतर समृध्द् और उपयुक्त् रही है।

संशोधन पध्दती

प्रस्तुत शोध निबंध यहँ भारतीय संगीत के पारम्पारिक ज्ञान व प्रगत संशोधन इस विषय पर आधारीत हैं, यहँ विषय ऐतिहासिक संशोधन और सामाजिक संशोधन पध्दती पर आधारीत हैं। प्रस्तुत शोध निबंध में भारतीय संगीत की पुस्तके, प्रत्रिकाये, संगीत अंक और इंटरनेट से प्राप्तसाहित्य् का यथोचित प्रयोग किया गया है।

प्राचीन वाद्य का पारम्पारिक ज्ञान: मनुष्य् के उत्क्रांत अवस्था में भी सामाजिक महत्त्वपूर्ण अनेक कर्मकांड में भेरी, नगारे, ढोल, ताशे, झांज इस के सहाय्यतासे खणखणाट कर मनुष्य् के उत्तेजित करते थे जो आज भी होता है। इसमें वाद्य पूर्व सामान्य् रूप के रहते थे, आज वँह अतिशय विकसित रहते हैं। अवनध्द् वाद्य चमडे से आच्छादित होते थे, यँह जगभर में प्रसिध्द् हैं। "स्वराची आस मानवी स्वरा प्रमाणे टिकू शकते अशा हारमोनियम, वायलिन, बाँसुरी, दिलरूबा, क्लॅरिओनेट यासारख्या वाद्याना हे विवेचन लागु पडते. वायलिन, क्लॅरिओनेट ही वादय परदेशी असली तरी या आस टिकून राहण्याच्या गुणामुळे ती भारतीय संगीतात रूळून गेली आहेत"[१]. इसकी शुरूवात मनुष्य् के आदिम अवस्था में हुई होगी। विश्व के विविध संस्कृती में अलग-अलग कर्मकांड में यानी रिच्युअल्स् में अनेक व्यक्ती समुह में बड़े-बड़े आवाज में वाद्य बजाते और उसके साथ कुछतोभी गाते थे। उनके शब्द् अर्थ से जादा वाद्यों के आवाजा को महत्त्व् था। शंख यहँ दिखने में अत्यंत मोहक और सुंदर होता है, और उसमें छुपा हुआँ नाद निकालने इच्छा प्रत्येक मनूष्य में निर्माण होती है, मनूष्य को मिला हुआँ यहँ एक वाद्य है। इस मिले हुये वाद्य से स्फुर्ती लेकर अनेक वाद्यों की निर्मिती हुई होगी। Musical instruments are seen in four contexts- solo, accompaniment to song, as followers of dance and finally, with singing and dancing combined[२].

बृहदारण्य्क उपनिषमें ऐसा कहाँ गया है,

यथा शंखस्य् ध्यायमानस्य् न बाह्यान् शब्दान् शक्नुयात गृहणाय।

दुंदुभेस्तु ग्रहणेन दुंदभयाघातस्य् वा शब्दो गृहीत:।[३]

संगीतशास्त्र का आदी ग्रंथ भरतमुनीरचित 'नाट्यशास्त्र' में भारतीय संगीत की अत्यंत महत्त्वपूर्ण श्रृती संकल्पना विस्तार से बताई गई है। यँह विस्तार से बताते हुये वाद्य का प्रयोग करणा पड़ता हैं। ध्रृव वीणा और चल वीणा ऐसे दो वीणा के साहाय्यतासे श्रृतिभेद वर्णन किया गया है। प्रमाण श्रृती और सप्त्क की श्रृती व्यवस्था समज लेनी हो तो वाद्यो का उपयोग करना पड़ता है[४]।

आधुनिक काल में जिगर मुरादाबादी इस शायर ने एक अत्यंत सुन्दर गझल वाद्यो के बारे में लिखी है।

'सोज में भी वही नग्मा हैं जो साज़ में हैं,
फर्क सिर्फ नज़दीक की और दुर की आवाज आवाज में हैं।
ये सबब है की, तडप सीना हैं हर साज़ में हैं।

जो न सूरत में न बानी में ना आवाज में हैं,
दिल की हस्ती भी सिलसिला-ए-राज में हैं।
गौशे मुस्ताक की क्या बात है अल्ला-अल्ला।
सुन रहा हूँ मैं वो नग्मा जो अभी साज़ में हैं।
फर्क सिर्फ नज़दीक की और दुर की आवाज में है[3]।

उत्कंबित कानों को वाद्य बजाने के पूर्व ही उस वाद्य का संगीत सुनाई देता है, ऐसा जिगर मुरादाबादी बताता हैं।

वाद्यो का विज्ञान स्थलांतरण: ध्वनी का भी एक शास्त्र होता है, और इस का आभास वाद्य बनानेवाले व्यक्ती को होना चाहिये। स्व्र और उससे निकलने वाला आठवा स्व्र इसमें एक सप्तक् स्थिर हुआ होणा ही एक सप्तक् है, ऐसा माना जाता है। वाद्य बनाने वाले व्यक्ती को गणित के आधार पर अनेक दुरीयाँ सिध्द् करके बिच के स्वरोंकी स्थाने निश्चित संभव होती है। ध्वनी, नाद, शब्द् स्व्र श्रती यहँ सभी अनुभव की बाते है और वाद्य तयार करते समय, बजाते समय, सुनते समय इन अनुभकों का समय-समय पर प्रत्येय आना चाहिये और आता हैं। भारतीय पारंपारीक वाद्य हो या किसी भी देश का या इलेक्ट्रोनिक वाद्य हों, वाद्यो का इतिहास देखते हुये एक बात मुख्यता से दिखाई पड़ती है, वहँ है वाद्या का होने वाला स्थलांतरण, हस्तांतरण। वाद्य यहँ वादको ने अपने साथ जहाँ वहँ जाये वहाँ ले जाने की चिज हैं[4]।

प्रगत संशोधन और संगीत वाद्य: बिसवी शताब्दा के शुरूवात सें वाद्यों और वाद्य वृंदों के अनेक नवीनतम रूप भारतीय संगीत में निर्माण हुई है, आनेवाले समय में नये-नये रूप सामने आ रहे है और अपने संगीत को समृध्द् कर रहे हैं। आदिमनुष्य् के नादविश्व्पर अधिकार प्राप्त् करनेकी इच्छा से निर्माण हुये साधारण और सामान्य् रूप से विकसित आधुनिक काल के वाद्यो को देखने से भारतीय वाद्य संगीत ने कितना बड़ा विकास हुआ है इसकी कल्पना आती हैं। वाद्य वृंदों की सबसे बडी उपयोगिता यह है कि एक ही काल मे अनेक वाद्यो के प्रदर्शन का लाभ होता हैं[4]।

"लय हा अक्षरगत, शब्दगत, पदगत, वादयगत असा होतो कारण तो 'कलाकालान्तरक्रत समत्व सिध्द करतो (अभिनवीभारती) अर्थात लयाने छन्द सिध्दी होते"[9]।

आधुनिक युग में अनेक वाद्यो का वर्णन मिलना है क्योकी प्रगत संशोधन की उन्नती से समय, स्थान आदी की कडीयाँ कट गयी है, इसीलिए पाश्चात्य् संगीत में भी जीन-जीन वाद्यो का वर्णन मिलता है, उन सभी का प्रयोग भी भारतीय संगीत में होने लगा है तथापी पाश्चात्य् संगीत ने वाद्यो के निर्माण में जो उन्नती की है वह भारतीय संगीत ने नही की क्योंकी भारतीय संगीत गायन प्रधान है और पाश्चात्य् संगीत वादन प्रधान हैं। आधुनिक युग में जिन-जिन वाद्य-यन्त्रों का वर्णन मिलता है, वे सब इस प्रकार है - सितार, तानपूरा, हारमोनियम, वायलिन, गिटार, सरोद, रबाब, सारंगी, बाँसुरी, शहनाई, तबला, ढोल, जलतरंग, काष्ठ् तरंग, काँच तरंग, मँजीरा, झाँझ, करताल, फेरी, ढोलक, बिगुल, शंख, बेल, दिलरूबा, पियानो आदी इन सब वाद्यों को हम चार मुख्य् भागों में बाँट सकते हैं। 1) तत, 2) सुषिर 3) अवनध्द् 4) घन। इन वाद्यो के वर्णन से ज्ञात होता है कि आधुनिक युग में ही वाद्य-यन्त्रो का विकास प्रचुर मात्रा में हुआ हैं।

पारम्पारिक ज्ञान से वाद्यो का उत्तरोतर विकास

लोक वादय प्रकूति की देन है, उनका मूल उत्सव प्रकूति प्रदत्त हैं। यथा अकाश में तब बादल घ्ुमडते हैं तो उनसे भिन्न भिन्न प्रकार की ऊॅची एव गंभीर आवाज होती हैं, उसी गंभीर एवं ऊॅची आवाज की धुन से मॉदर, ढोल, नगाडे एवं मूंदग की रचना हुई हैं[6]। प्राचीन काल के वाद्यो का प्रयोग गायन, वाहन तथा नृत्य् की संगीत में होता है। अर्थात जब से मानव ने बोलना सीखा तभी से उसे गाना भी आ गया वह गाना चाहे किसी भी रूप में रहा होगा। उसके गायन की संगत के रूप में शायद वाद्य-यन्त्रों भी उसी समय ही प्रचलित हो गये होंगे। यही उसी समय नही तो कुछ वर्षो के पश्चात वाद्य-यन्त्रों का आरम्भ् अवश्य् हो गया होगा क्योंकी किंवदन्तियों तथा जनश्रृतियों से ज्ञात होता है कि बहुत पहले मानव जीवन में एक गढ़ा खोदकर उसके उपर खाल मढ़ लिया करता था और उसी से गायन तथा नृत्य् की संगत किया करता था। फिर हमें रामायन तथा महाभारत काल में तो अनेक वाद्य-यन्त्रों का वर्णन मिलता है जोकि अब दखने को नही मिलते हैं। उस समय जो वाद्य प्रचलित थे वे निम्न् प्रकार के थे-मृदङ्, डिमडिम, भेरी, दुंदुभी, पणव, घट आदि तथा वैदिक काल में भी भू-दुंदुभी, डमर, ढोल, नगाड़ा, मर्छल, भेरी इत्यादी का उल्लेख मिल जाता हैं। बाँसुरी

भी अत्यंत प्राचीन वाद्य है। आदि मानव ने जब बाँस के वनों में से आवाज आती सुनी होगी तो उन्होंने उसका विश्लेषण करना चाहा होगा जिसके परिणामस्वरूप उन्हे इस बात का ज्ञान हुआ होगा कि बाँस में हवा का प्रवेश आवाज का उत्पादक है तो उन्होंने छोटे-छोटे टुकडे काटकर उसमें हवा के लिए छोटे-छोटे छिद्र किये होंगे, उसी से बाँसुरी का अविष्कार हुआ। महाभारत में कृष्ण की बाँसुरी से गोपिकाओं की अपनी सुध-बुध खो लेना अत्यन्त् प्रसिध्द् हैं। आधुनिक युग में प्रचलित शहनाई, बीन इत्यादी इसी बाँसुरी के विकृत रूप हैं। लोक जीवन में आनंद और उत्साह बढाने में वादयो का सदैव प्रयोग होता आया हैं । नूत्य और गीत दोनों ही वादयो के आश्रित हैं । अत:लोक जीवन में इन कलाओं को सुरक्षित रखने में वादयों ने समुचित सहायता दी हैं[७]। इसके पश्चात मध्य् युग में पखावज, तबला तथा अनेक प्रकार की वीणाओ का प्रचुर मात्रा में प्रयोग होने लगा। कुछ व्यक्तीयों का कथन है की, डमरू से मृदंग तथा मृदंग से पखावज और पखावज से तबले का आविष्कार हुआ[१]। तबले के आविष्कार के लिए लोगों का कथन है कि यह अमीर खुसरोद्वारा 13वी शताब्दी में पखावज को दो भागों में बाँट देने से हुआ। इसी प्रकार मध्य् युग में एकतारे का काफी प्रचार था जैसे कि हमे मीराँ तथा चैतन्य् महाप्रभु को एकतारे हाथ में लिये हुए भावावेश में गाते हुए, अनेक चित्रों में दिखते हैं। गुप्तयुग की चित्रकारी में अनेक सुन्दरियों को वीणा लिये हुए दिखाया गया हैं। इन प्रकार हम तानपूरे को ब्रम्हावीणा, रूद्रवीणा, किन्नरी इत्यादी की जाती का वाद्य वक सकते हैं[३]।

रविन्दसंगीत में धूपद की तरह गायन के साथ जिन वादये यंत्रो से काम लिया जाता था,वे भी पखावज और तानपूरा थे। आर्गन, जैसे हारमोनियम, का उपयोग होता था लेकीन उससे श्रूति में कोई बाधा ना पडती थी[८]।

मध्ययुग में एक अन्य् वाद्य-यन्त्र का आरम्भ् हुआ। वह था 'सितार'। इसके आविष्कारक 'पद' से भी अमीर खुसरो को ही विभुषित किया जाता हैं। इसका प्रथम नाम 'सहतार' था, उसी का अपभ्रंश रूप सितार हैं। इसके पश्चात आधुनिक युग में अनेक वाद्य-यन्त्रों का वर्णन मिलता है क्योंकी विज्ञान की उन्नती से समय, स्थान इत्यादी की कड़ीयाँ कट गयी हैं, इसीलिए पाश्चात्य् संगीत में भी जिन-जिन वाद्यो का वर्णन मिलता है, उन सब का प्रयोग भी भारतीय संगीत में होने लगा है तथापी पाश्चात्य् संगीत ने वाद्य-यन्त्रों के निर्माण में जो उन्नती की है वहँ भारतीय संगीत ने नही की क्योंकी भारतीय संगीत गायन प्रधान है और पाश्चात्य् संगीत वादन प्रधान हैं[९]।

पारम्पारिक के आधार पर आधुनिक वाद्य-वृंद

लोक संगीत में वादयों का महत्व शास्त्रीय संगीत की अपेक्षा बहुत अधिक होता है, विशेष रुप से ताल वादयो का विकास लोक संगीत के साथ साथ हुआ तथा एक ही प्रकार के वादयो को अलग अलग आकूति एवं नाम प्राप्त हुआ[१०]। भारतीय संगीत में वाद्य का स्थान अत्यन्त् महत्त्वपूर्ण हैं। वाद्य-वृन्द् से तात्प्.र्य है अनेक वाद्यो क सम्मिलित प्रदर्शन एक से अधिक वाद्यों की पारम्पारिक संगती अधिक चमत्कारपूर्ण और आकर्षक होती है। जब भिन्न्- भिन्न् प्रकार की ध्व्रनियों को मिलाकर एक विलक्षण नाद उत्पन्न् होता है, जो अत्यन्त् चित्तरंजक और ह्रदयग्राही होता है। वाद्य-वृंद में एक से अधिक कोई भी वाद्य रखे जा सकते है किन्तु आधुनिक संगीत-जगत में प्राय: सितार, वाइलेन, सारंगी, सरोद और बाँसुरी आदि का प्रयोग किया जाता है। वाद्य-वृंद की सबसे बड़ी उपयोगिता यहँ है की, एक ही काल में अनेक वाद्यो के प्रदर्शन का लाभ होता है। वाद्य-प्रदर्शन के समय प्रत्येक वादक को अपनी कालाकृती को प्रदर्शित करने का अवसर प्राप्त् होता है। यहँ सभी वाद्य आधुनिक काल में इलेट्रोनिक की सहाय्यता से प्रगत हुये है। आधुनिक कालमें चलचित्रों का अधिक प्रचलन है। चलचित्रों में संगीत का कोई-न-कोई कार्यक्रम अवश्य् रहता हैं। संगीत का कोई भी ऐसा क्षेत्र नही है जिसमें वाद्य-वृंद का प्रयोग न किया जाता हो। विभिन्न् प्रान्तो के लोकगीतों के स्वतन्त्र प्रदर्शन में भी वाद्य-वृंद का प्रयोग अनिवार्य रूप से किया जाता हैं। इस प्रकार पारम्पारिक के आधार पर वाद्य-वृंद प्रगत संशोधन की साहायता से संगीत जगत में आपना अस्तित्व् निर्माण करने में यशस्वी हुये है[११]।

उपसंहार

भारतीय संगीत में वाद्य संगीत अत्यन्त् महत्त्वपूर्ण स्थान हैं। प्राचीन काल से भारतीय वाद्य संगीत प्रचलीत और प्रसारीत हुआ है। देवी-देवताओं के हाथ मे संगीत वाद्य प्राचीन काल से आज आधुनिक काल में भी विद्यमान है। भारतीय संगीत को

अनादी काल तक जिवीत रखने के लिये पारम्पारिक ज्ञान के उपयोग से आधुनिक काल के भागमभाग जीवन में भारतीय पारम्पारिक वाद्य का स्वरूप बदलकर छोटा और कम कढनाईवाला किया गया हैं, इसका कारक है, प्रगत संशोधन यहँ प्रगत संशोधन का उपयोग संगीत हुआँ इस लिये ही भारतीय वाद्य संगीत परम्परा शाश्वत भविष्य् में भी प्रसिध्द् और प्रचलित रहेगी इसमें शंका नही प्रस्तुत विषय यहँ 'भारतीय वाद्य संगीत के शाश्वत भविष्य् पारम्पारिक ज्ञान और प्रगत संशोधन की एकत्रित भूमिका' पर आधारिक कियाँ गया हैं। किसी भी कला को यदी समृध्द् करना हो तो पारम्पारिक: का आधार लेकर ही प्रगत संशोधन के उपयोग से समृध्द् किया जा सकता है, उनकी एकत्रित भुमिका महत्त्वपूर्ण रहती हैं।

संदर्भ सुची

1. *ठकार सुलभा* (२००७), संगीत आणि सौंदर्यशास्त्र, प्रकाशन - अक्षरलेणं प्रकाशन, सोलापूर, नोव्हेंबर.
2. *टौंगोर सी.एस.एम.* (२००६), हीस्टी अॉफ म्युझीक,, ओरिएन्टल बुक सेन्टर, दिल्ली
3. *चंदावरकर भास्क्रर (*२०११), वाद्यवेध आणि भारतीय संगीताची मूलतत्वे, प्रकाशन - राजहंस प्रकाशन प्रा.लि.,.
4. *पाठक पं. जगदीश नारायण* (२००४), संगीत निबन्ध् माला, प्रकाशन - पाठक पब्लिकेशन- इलाहाबाद.
5. *जाते कृष्णचंद्र* (२०००), भारतीय संगीत: स्वरूप आणि प्रयोजन, प्रकाशन - मौज प्रकाशन मुंबई
6. *मोहम्मद शरीफ* (१९९९), मध्यप्रदेश का लोक संगीत, प्रकाशन - मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, भोपाल
7. *खडीकर विजया* (२००३), मालवा के लोकनूत्य, प्रकाशन - डॉ निखीलेश शास्त्री मेसर्स कटिन्स प्रिंटर्स इन्दौर.
8. *शर्मा रामविलास* (२०१०), संगीत का इतिहास और भारतीय नवजागरण की समस्याएँ, प्रकाशन - वाणी प्रकाशन दिल्ली
9. *रानडे अशोक डी.* (१९८९), महाराष्ट्र: आर्ट म्युझिक , प्रकाशन महाराष्ट्र इमर्फामेशन सेन्टर– दिल्ली
10. *शर्मा स्वतंत्र* (२०१०), सौंदर्य रस एवं संगीत, प्रकाशन - अनुभव पब्लकिशन हाउस, इलाहाबद
11. The MET (2018). The Met Fifth Avenue. https://www.metmuseum.org/pubs/bulletins/1/pdf/3261252.pdf.bannered.pdf01/05/2018